दादा भगवान परिवार का

मार्च - २०२३

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

राजा श्रेणिक

संपादकीय

बाल मित्रों,

क्या आप सभी को याद है कि जनवरी २०२० में तीन हज़ार महात्माओं को एक जैकपॉट लगा था? पूज्यश्री के साथ सम्मेद शिखरजी की यात्रा का जैकपॉट! उस यात्रा के दौरान राजगीर गाँव में चार दिनों तक सत्संग का आयोजन किया गया था।

राजगीर (राजगृही) अर्थात् वह भूमि जो लगभग २५०० वर्ष पहले महावीर प्रभु के चरणस्पर्श से पावन हुई थी। इस राजगीर शहर के निर्माण का सौभाग्य राजा श्रेणिक को प्राप्त हुआ था।

चलो, इस अंक में राजा श्रेणिक का परिचय प्राप्त करते हैं। राजा श्रेणिक भगवान महावीर के भक्त कैसे बने? भगवान महावीर के दर्शन से उन्हें क्या प्राप्त हुआ? क्या उनसे जीवन में कोई भूल हुई थी? उस भूल से हम क्या सीख सकते हैं?

तो, थिओ तथा फ्रेन्ड्स के साथ उनकी जर्नी (यात्रा) में जुड़कर राजा श्रेणिक के जीवन की बातें जानते हैं और सही समझ प्राप्त करते हैं।

-डिम्पल मेहता

वर्ष : १० अंक : १२
अखंड क्रमांक : १२०
मार्च - २०२३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2023, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

राजगीरी की यात्रा पर...

थिओ तथा उसकी टोली अमेरिका से बिहार के 'राजगीर' गाँव में लैन्ड हुई...

हाँ, हाँ... गाँव में ! अमेरिका की सुख-सुविधाओं को बाइ-बाइ कहकर प्लेन यहाँ लैन्ड तो हो गया है, लेकिन साथ ही साथ रिज़ो के मूड में भी क्रेश लैन्डिंग हुआ है। वह तो होटेल के रूम से बाहर निकलने को तैयार ही नहीं है।

लेकिन बाकी के फ्रेन्ड्स तो राजगीर में मजा करने को एकदम रेडी हैं। थिओ तो नई-नई बातें जानने के साथ-साथ लीट्टी-चोखा यानी कि बिहार की फेमस आइटम खाने के लिए उतावला हो रहा है। ज़ोई ने जानकारी दी है कि इस गाँव को राजा श्रेणिक ने बनाया है। और इसीलिए वह राजा श्रेणिक के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्साहित है।

और सबसे अधिक यदि कोई उत्सुक है तो वो है, जिफ्फी! यह जगह उसी ने सिलेक्ट की है। जब से उसे यह पता चला है कि यह गाँव आने वाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर ने बनाया है तब से उसकी खुशी समा ही नहीं रही है। वे कैसे थे? कौन थे? महावीर भगवान के साथ उनका क्या कनेक्शन था? यह सब उसे जानना है।

और आपको तो पता ही है कि जब थिओ और फ्रेन्ड्स कुछ खोजने का निश्चय करते हैं तो वे उसे खोज कर ही रहते हैं। लेकिन क्या रिज़ो के सपोर्ट के बिना ये टोली कामयाब होगी? चलो देखते हैं...

मगध का सिंहासन

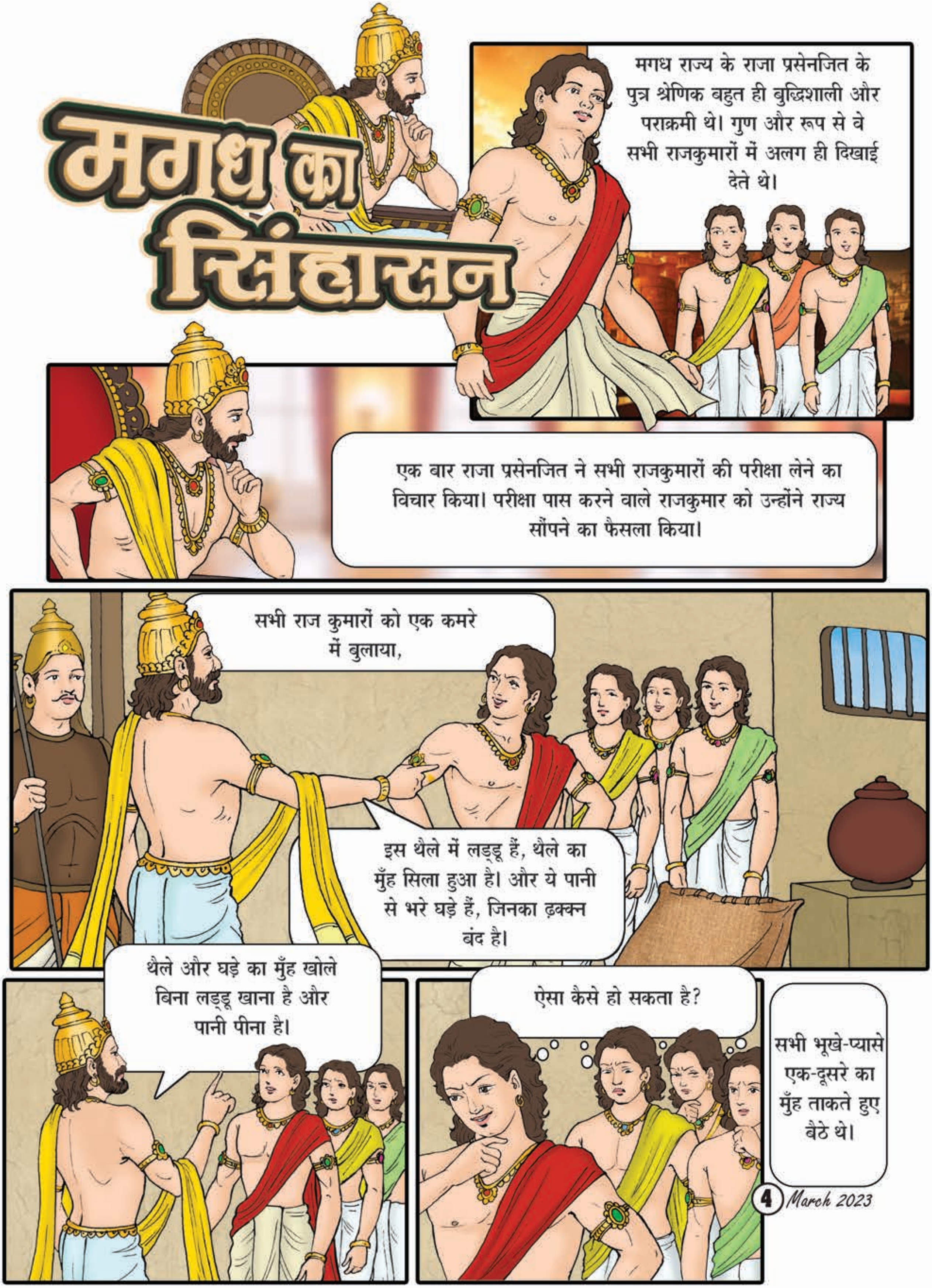

मगध राज्य के राजा प्रसेनजित के पुत्र श्रेणिक बहुत ही बुद्धिशाली और पराक्रमी थे। गुण और रूप से वे सभी राजकुमारों में अलग ही दिखाई देते थे।
एक बार राजा प्रसेनजित ने सभी राजकुमारों की परीक्षा लेने का विचार किया। परीक्षा पास करने वाले राजकुमार को उन्होंने राज्य सौंपने का फैसला किया।
सभी राज कुमारों को एक कमरे में बुलाया,
इस थैले में लड्डू हैं, थैले का मुँह सिला हुआ है। और ये पानी से भरे घड़े हैं, जिनका ढ़क्कन बंद है।
थैले और घड़े का मुँह खोले बिना लड्डू खाना है और पानी पीना है।
ऐसा कैसे हो सकता है?
सभी भूखे-प्यासे एक-दूसरे का मुँह ताकते हुए बैठे थे।

लेकिन श्रेणिक कुमार शांत बैठने वालों में से नहीं थे।
चलो, अन्न-जल ग्रहण करते हैं।
श्रेणिक ने थैले को बहुत हिलाया। जिससे अंदर लड्डू टूटकर चूरा बन गए। कुमार ने हिला-हिलाकर उस चूरे को नीचे गिराया।
ये खा लो।
सभी ने लड्डू का चूरा खाकर पेट भरा।
लेकिन पानी कैसे पीया जाए?
घड़ों पर कपड़ा लपेट दो। घड़े नए हैं, इसलिए इनमें से पानी रिसेगा।
रिसे हुए पानी को कपड़े से निचोड़कर सब ने अपनी प्यास बुझाई।
वाह! मेरा पुत्र श्रेणिक सबसे बुद्धिशाली है। राजगद्दी तो उसे ही सौंपूँगा।
5
Akram Express

राजा ने दूसरे राजकुमारों को छोटे-छोटे प्रदेश दिए। लेकिन श्रेणिक को राजगद्दी सौंपने के लिए प्रतीक्षा की।
मेरा इतना घोर अपमान! पिताजी ने मुझे कुछ नहीं दिया। मैं यह राज्य छोड़कर जा रहा हूँ और फिर वापस कभी नहीं लौटुँगा।
राजकुमार श्रेणिक समुद्र किनारे एक शहर में जाकर बस गए। अपनी चतुराई से अच्छा व्यापार करने लगे।
दूसरी तरफ, राजा प्रसेनजित बहुत बीमार पड़ गए।
सैनिक श्रेणिक को ढूँढ़ते हुए उनके पास आ पहुँचे...
आपके पिताजी मृत्यु शय्या पर हैं और आपको बहुत याद कर रहे हैं।

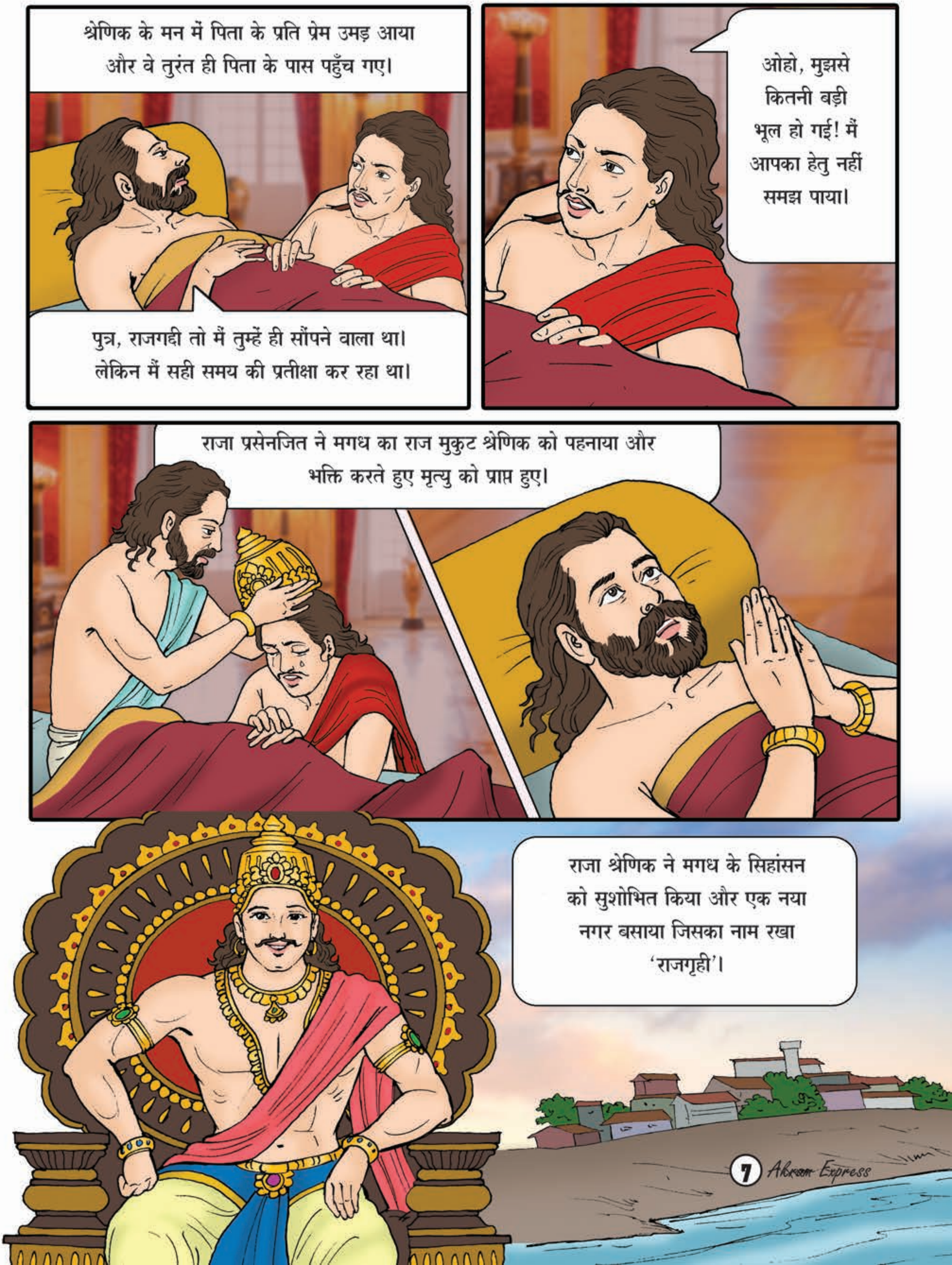
श्रेणिक के मन में पिता के प्रति प्रेम उमड़ आया और वे तुरंत ही पिता के पास पहुँच गए।
पुत्र, राजगद्दी तो मैं तुम्हें ही सौंपने वाला था। लेकिन मैं सही समय की प्रतीक्षा कर रहा था।
ओहो, मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गई! मैं आपका हेतु नहीं समझ पाया।
राजा प्रसेनजित ने मगध का राज मुकुट श्रेणिक को पहनाया और भक्ति करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए।
राजा श्रेणिक ने मगध के सिहांसन को सुशोभित किया और एक नया नगर बसाया जिसका नाम रखा 'राजगृही'।

चलो खेलें...

चित्र में दी गई चीज़ों की गिनती कर रिक्त स्थान में लिखिए।

______

______

______

______

महावीर स्वामी के भक्त बन गए

राजा श्रेणिक की पत्नी रानी चेलना भगवान महावीर की परम भक्त थीं। लेकिन यह बात राजा श्रेणिक को पसंद नहीं थी। उन्हें लगता था कि महावीर भगवान के सभी साधु ढ़ोंगी हैं।

एक बार राजा श्रेणिक शिकार करने गए। वहाँ उन्होंने गहरे ध्यान में लीन यमधर साधु को देखा। राजा श्रेणिक ने उन पर अपने शिकारी कुत्ते छोड़ दिए। लेकिन साधु शांत और गहरे ध्यान में लीन रहे। साधु की स्थिरता देखकर कुत्ते भी शांत हो गए। राजा को लगा कि साधु ने कुछ जादू किया होगा। इसलिए उन्होंने साधु पर तीर चलाने शुरू कर दिए। लेकिन तीर निशाने

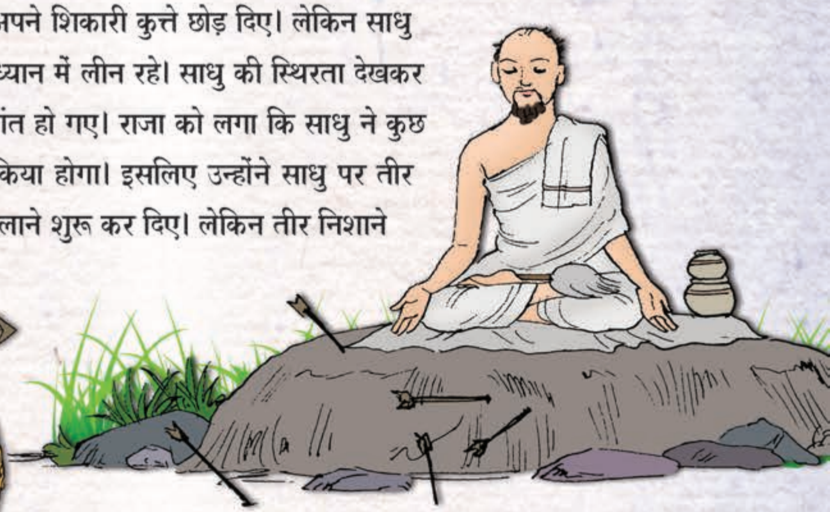

पर नहीं लग रहे थे। यह देखकर राजा श्रेणिक बहुत परेशान हो गए। अंत में उन्होंने एक मरे हुए साँप को यमधर के गले में लपेट दिया और महल में लौट आए।

महल में आकर राजा ने रानी चेलना को पूरी घटना विस्तार से सुनाई। यमधर साधु के लिए रानी को बहुत दुःख हुआ। जहाँ यमधर साधु ध्यान कर रहे थे, वे वहाँ राजा को लेकर गईं। मरे हुए साँप के कारण चींटियाँ और दूसरे

जीव-जन्तु साधु के शरीर पर चढ़ गए थे। लेकिन साधु बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए थे।

रानी ने बहुत सावधानी से साधु के शरीर से चींटियाँ और जीव-जन्तुओं को हटाया। उनके शरीर से मरे हुए साँप को हटाया। चींटियों के काटने से हुए घावों को साफ किया। और साधु के शरीर पर चंदन का लेप लगाया।

कुछ देर बाद यमधर ने आँखें खोलीं तथा राजा और रानी को आशीर्वाद दिए। खुद को तकलीफ पहुँचाने वाले राजा और दुःख दूर करने वाली रानी मे कोई भेदभाव नहीं किया।

यह देखकर राजा श्रेणिक उनसे बहुत प्रभावित हुए। इस प्रकार रानी चेलना के साथ-साथ राजा श्रेणिक भी महावीर भगवान के परम भक्त बन गए।

और जिफ्फी मेरे लिए लिट्टी-चोखा लेकर आया, तो वह मेरा बेस्ट फ्रेन्ड यानी कि परम मित्र बन गया।
ऑर्डिनरी लोग तो ऐसा ही करते हैं न! जो इन्सल्ट करे उसके साथ कट्टी और जो अच्छा रखे उसके साथ बुच्ची! लेकिन यमधर साधु तो महावीर भगवान के शिष्य थे। इसलिए उन्होंने रानी चेलना और राजा श्रेणिक के बीच कोई अंतर नहीं किया।
ऐ जिफ्फी मैं कोई ऑर्डिनरी नहीं हूँ! मैं तो एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी हूँ! मैंने तो रिज़ो को सेल्फी के साथ 'मिस यू' का मैसेज भी भेज दिया है।

तीर्थंकर गोत्र किस प्रकार बँधा गया?

महावीर भगवान राजगृही नगर में पधारे थे। रानी चेलना श्रेणिक राजा को भगवान महावीर के दर्शन करने के लिए ले गई। भगवान के साथ राजा श्रेणिक की यह प्रथम मुलाकात थी। श्रेणिक राजा भगवान को देखते ही भाव विभोर हो गए। राजा के हृदय में भक्तिभाव जागा और भीतर बहुत आनंद का अनुभव हुआ।

उन्होंने भगवान के चरणों में अत्यंत भाव से साष्टांग प्रणाम किया। राजा ने इतने उच्च भाव से भगवान के चरणों में वंदन किया उसी समय उन्होंने तीर्थंकर गोत्र बाँधा और इस तरह राजा श्रेणिक आने वाली चौबीसी के, अपनी ही भरतभूमि पर, पद्मनाभ प्रभु के नाम से प्रथम तीर्थंकर होगें!

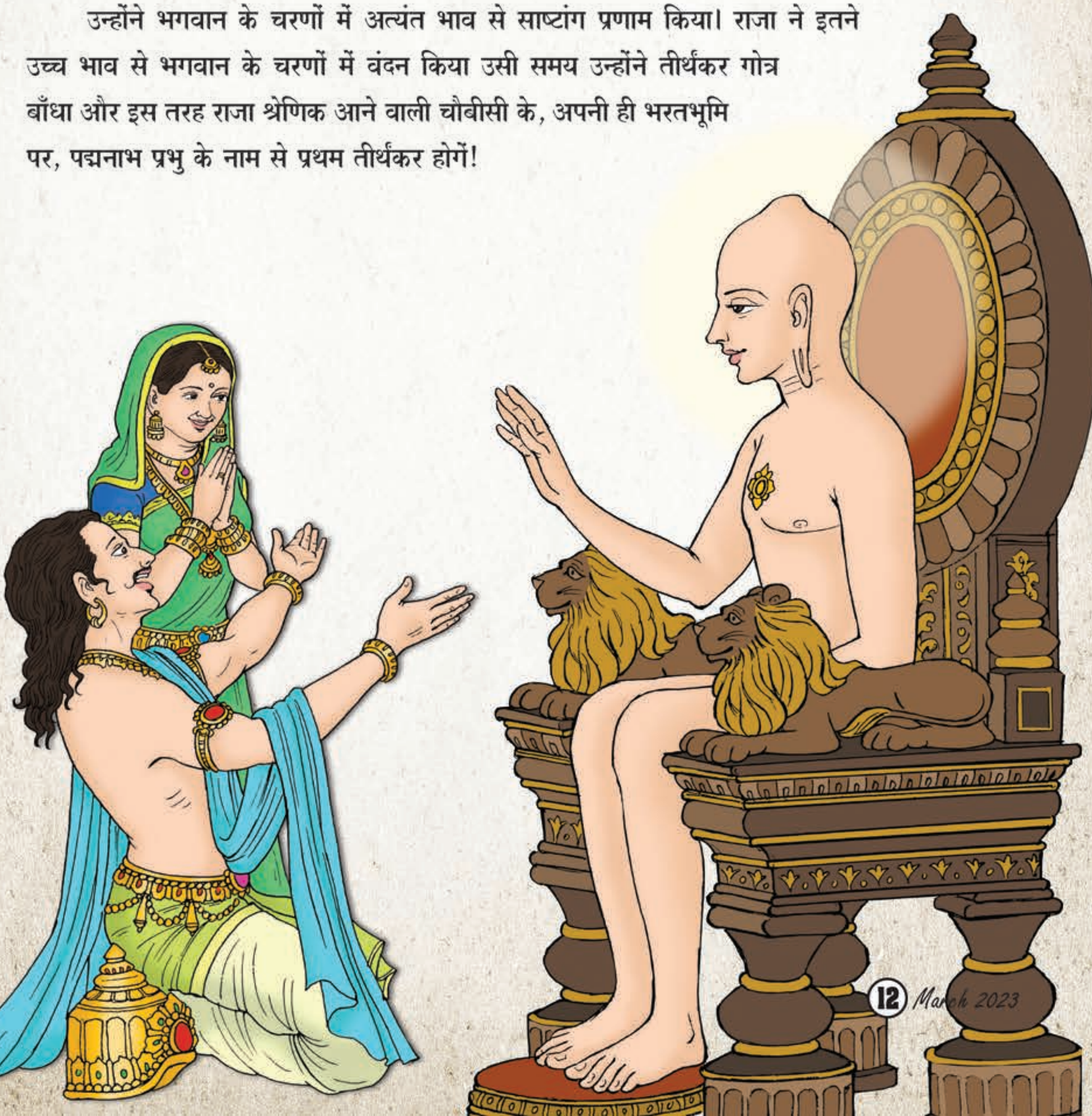

*डीडीमां जंगल में इन्टरनेट सर्च के लिए उपयोग किया जाने वाला लेपटॉप

Summer Camp 2023

Sanskar Sinchan Shibir - 2023 for Kids and Youth

	Group D 4 to 7 Years		Group C 8 to 12 Years	
Center	Date	Contact Number	Date	Contact Number
Simandhar city	22 April	079-35002154	23, 24 April	079-35002154
Ahmedabad	31 March	8141377833	26 March	9428384118
Amreli	-	-	27,28 May	9408898792
Ankleshwar	14 April	7984196369	25 April	9558203868
Baroda	16 April	9825018956	29, 30 April	9428767383
Bharuch	-	-	13, 14 May	8320710688
Bhavnagar	16 May	9909463142	13, 14 May	9558860259
Bhuj	11 May	9429297223	13, 14 May	8200303866
Dhoraji	-	-	30 April	9574046082
Gandhidham	-	-	23 April	9428310787
Jamnagar	14 May	9924780877	20, 21 May	9723147318
Junagadh	-	-	16 May	7984313397
Mahesana	4 June	9427375177	30 April	9427375177
Morbi	12 May	9725199144	18 May	9978633035
Mumbai	8 April Borivali 15 April Mulund 16 April Ghatkopar	8652890066	15 , 16 April	9867989202
Nadiad	-	-	30 April	9979075434
Pune	-	-	30 April	7774079780
Rajkot	16 April	9979620315	22, 23 April	7779023726
Surat	16 April	9913141600	22, 23 April	9574008498
Surendranagar	-	-	29,30 April	9106477459
Vijapur	-	-	28 May	9429742578
Veraval	12 May	8980483683	14 May	9712191887
Valsaad	-	-	4 June	9276252930

1. In order to attend the summer camp, it is mandatory to register at a nearby centre. The registration charges are non-refundable.
2. The registration for the youth and kids will be done based on the pre-fixed dates as per their age and standard. The registration will be closed 7 days before the camp start date. Thereafter, additional tatkal charges will have to be paid for the registration.
3. Registration for attending the summer camp at Simandhar City will have to be done at 'Store Of Happiness' within the Trimandir Sankul between 09.30 AM to 12 noon and 4.00 PM to 7.00 PM in the evening. Registrations have to be done 5 days prior to the summer camp. The registration will start from 5th April.

Contact Number - 079-35002154.

नर्कगति किस प्रकार बँधी गई?

एक दिन देवताओं की सभा में राजा श्रेणिक की महावीर प्रभु के प्रति भक्ति की बहुत प्रशंसा हुई। यह सुनकर एक देवता को राजा श्रेणिक की परीक्षा लेने की इच्छा हुई और वे एक रोगी का रूप धारण कर महावीर भगवान की सभा में पहुँच गए।

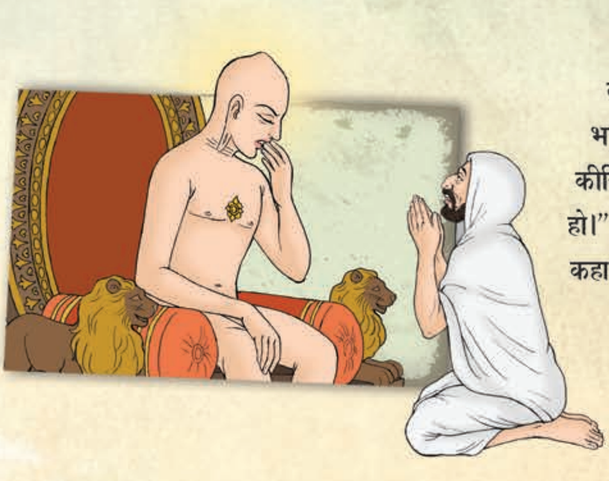

वह रोगी भगवान के चरण स्पर्श करने गया, तभी भगवान को छींक आई। रोगी ने कहा, "मृत्यु को प्राप्त कीजिए।" श्रेणिक राजा को छींक आने पर कहा, "दीर्घायु हो।" श्रेणिक राजा के पुत्र अभय कुमार को छींक आने पर कहा "जियो या मरो।" वहाँ उपस्थित एक कसाई को छींक आने पर कहा, "न जियो न मरो।"

भगवान को "मृत्यु को प्राप्त कीजिए" कहा, इसलिए राजा श्रेणिक अत्यंत क्रोधित हो गए। राजा ने सिपाहियों को रोगी को पकड़ने का आदेश दिया। लेकिन तभी देवता ने दिव्य रूप धारण किया और वे आकाश मार्ग से उड़ गए।

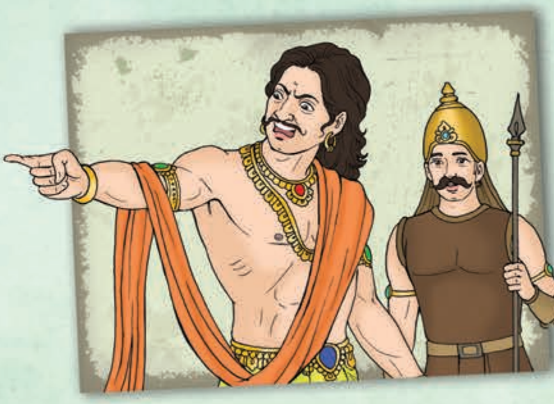

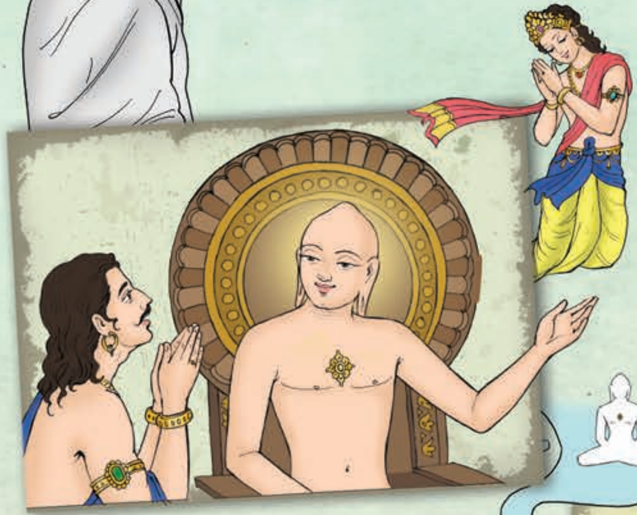

राजा श्रेणिक ने जब भगवान को इस रहस्यमय व्यक्ति की रहस्यमय बातों का अर्थ बताने के लिए विनती की तब भगवान ने कहा कि, "वे एक देवता थे, जो श्रेणिक राजा की परीक्षा करने आए थे।"

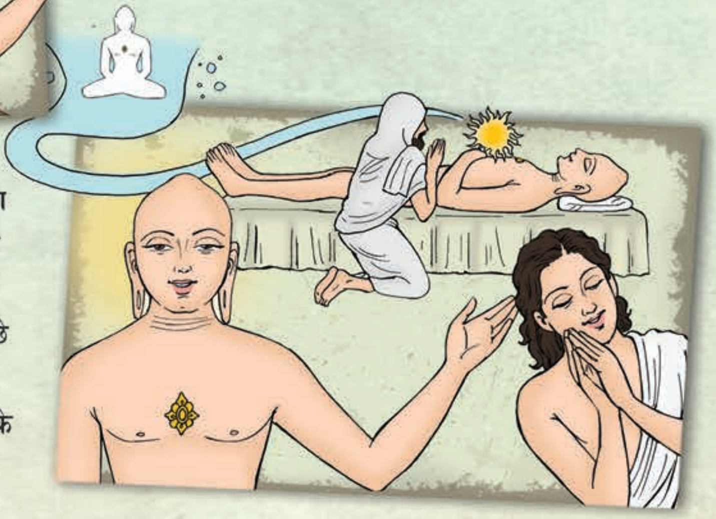

भगवान को "मृत्यु को प्राप्त कीजिए" कहने का कारण यह था कि भगवान यदि मृत्यु को प्राप्त होंगे तो मोक्ष जाएँगे। श्रेणिक राजा के पुत्र अभयकुमार को "जियो या मरो" कहने के पीछे का हेतु यह था कि अभय कुमार जिएँगे तो भक्ति-आराधना में जीवन बिताएँगे और मृत्यु के बाद देवगति पाएँगे।

कसाई को "न जियो न मरो" इसलिए कहा क्योंकि यदि वह जिएगा तो ज्यादा हिंसा करके पाप बाँधेगा और मरने के बाद नर्क में जाएगा। तथा राजा श्रेणिक को "दीर्घायु हो" कहने का कारण यह था कि यदि राजा की मृत्यु होगी तो वे पहली नर्क में जाएँगे।

भगवान की वाणी सुनकर राजा श्रेणिक घबरा गए। उन्होंने भगवान से अपनी नर्कगति के पीछे का कारण पूछा तो भगवान ने बताया कि, एक दिन राजा श्रेणिक शिकार के लिए गए थे, तब उन्होंने बाण से एक गर्भवती हिरणी को मार दिया था और फिर अहंकार किया था कि उन्होंने एक बाण से दो जीवों को मारा। ऐसी भयंकर हिंसा करने के बाद अहंकार करने के कारण उन्होंने नर्कगति बाँधी है।

साथ ही भगवान ने राजा को यह भी बताया कि नर्क की आयु पूरी करके वे भरतक्षेत्र में जन्म लेंगे और पद्मनाभ नाम के पहले तीर्थंकर होंगे।

ज्ञानी कहते हैं...

भरतक्षेत्र में राजा श्रेणिक पद्मनाभ प्रभु के रूप में (लगभग ८१००० वर्ष के बाद) आने वाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर होंगे। राजा श्रेणिक को महावीर भगवान के दर्शन मात्र से तीर्थंकर गोत्र बँध गया। जबकि महावीर भगवान के पास ऐसे जीव भी आए जिनकी भगवान के दर्शन करके उलटी मशीन घूमी और उनके अनंत जन्म हुए!

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि राजा श्रेणिक नर्क में गए। तो क्या उन्होंने पाप करने के बाद प्रतिक्रमण नहीं किया होगा?

पूज्यश्री : राजा श्रेणिक की बात अलग है। वे तो कितने पावरफुल राजा थे! उन्होंने मन-वचन-काया की एकतापूर्वक गुनाह किये थे। प्रतिक्रमण किया तो होगा, लेकिन पाँच करोड़ का घाटा हो और बीस लाख का प्रॉफिट ऐड करे तो क्या होगा?

हमें क्या करना है वह समझ लेना चाहिए। इस कलियुग में तो घाटा भी छोटा होता है। छोटा मतलब क्या? गलती करता है और फिर तुरंत ही मन बदल जाता है और बहुत पश्चाताप होता है। बाहर नेगटिव बोल रहा होता है और मन में पश्चाताप होता है कि फिर से कहाँ उलटा बोल रहा हूँ?! अर्थात् एकतापूर्वक किए जाने वाले गुनाहों जैसा मजबूत नहीं होता है।

हमें तो अब समझदार बनकर दादा की आज्ञा का पालन करना है।

चलो खेलें...

रास्ता भटके हुए सैनिक को महल तक पहुँचने में मदद करो।

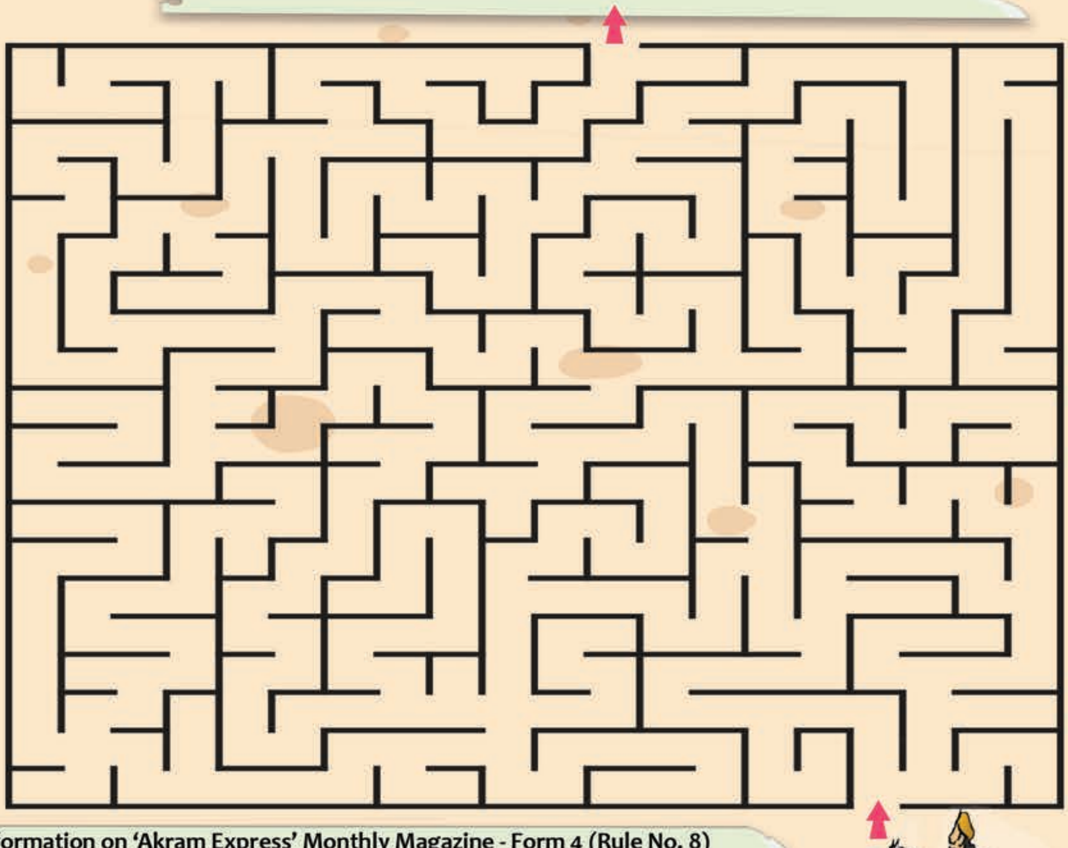

Information on 'Akram Express' Monthly Magazine - Form 4 (Rule No. 8)

1. Place of Publication: Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. Periodicity of its Publication: Monthly
3. Printers Name: Amba Offset Nationality: Indian

Address: B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025

4. Publisher's Name: Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation Nationality: Indian

Address: Simandhar City, Adalaj – 382421, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421

5. Editor's Name: Dimple Mehta Nationality: Indian Address: Same as above
6. Name of Owner: Mahavideh Foundation Nationality: Indian Address: Same as above

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date: 08-03-2023, Ahmedabad Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation

(Signature of Publisher)

Akram Express

March 2023
Year : 10, Issue : 12
Conti. Issue No.: 120

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

रिज़ो क्यों चिंतित है?

रिज़ो को श्रेणिक राजा के बारे में एक नई जानकारी मिली है, उसे देखते ही वह हड़बड़ाया हुआ अपने टोली की तलाश कर रहा है। उसने आलु और चिली के वीडियो कॉल भी नहीं उठाए। आलु उसे 'कॉल ऑफ ड्यूटी' वीडियो गेम खेलने के लिए बुला रहा है। लेकिन रिज़ो ने तो 'कॉल ऑफ ड्यूटी' गेम फोन से डिलीट ही कर दिया है। रिज़ो को ऐसा क्या मिल गया कि उसने वह गेम अपने फोन से डिलीट कर डाला और बिना खाए-पिए अपनी टोली को ढूँढ़ रहा है? रिज़ो के मन की बात जानने तथा 'थिओ और फ्रेन्डस' के एडवेन्चर का और आनंद लेने के लिए, अगला अंक पढ़ना न भूलें...

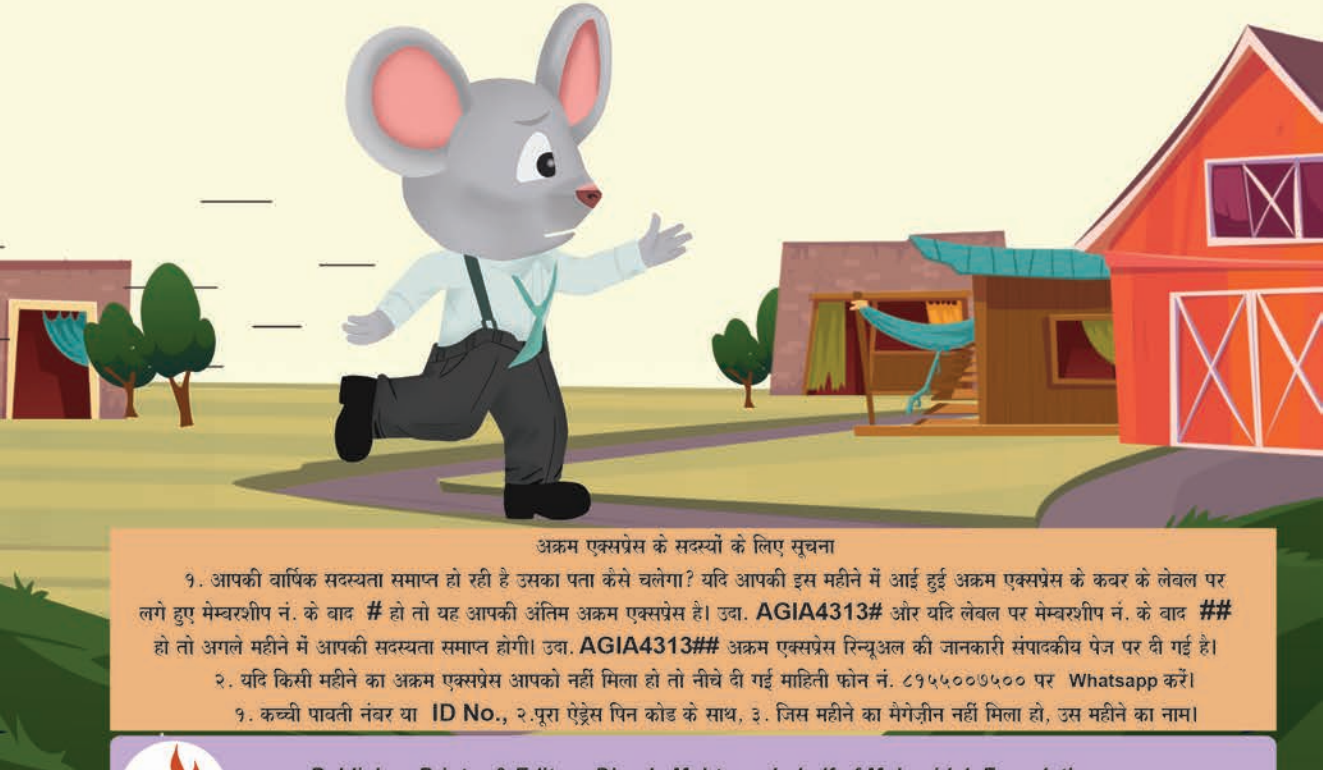

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025